**णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया णियमा अत्थि ॥ १ ॥**

विचयो विचारणा। केसिं ? अत्थि णत्थि त्ति भंगाणं। कुदोवगम्मदे ? 'णेरइया णियमा अत्थि' त्ति सुत्तणिद्देसादो। ण बंधगाहियारे एदस्संतब्भावो, सव्वद्धं णियमेण पुणो अणियमेण च मग्गणाणं मग्गणविसेसाणं च अत्थित्तपरूवणाए एदिस्से सामण्णत्थित्तपरूवणम्मि अंतब्भावविरोहादो।

**एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ २ ॥**

कुदो ? णियमा अत्थित्तणेण भेदाभावादो। सामण्णपरूवणादो चेव विसेसपरूवणाए सिद्धाए किमट्ठं पुणो परूवणा कीरदे ? ण, सत्तण्हं पुढवीणं णियमेणत्थित्ताभावे वि सामण्णेण णियमा अत्थित्तस्स विरोहाभावादो।

---

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगमसे गतिमार्गणानुसार नरकगतिमें नारकी जीव नियमसे हैं ॥ १ ॥

'विचय' शब्दका अर्थ यहां अस्ति-नास्ति भंगोंका विचार करना है।

शंका— यह कहांसे जाना जाता है ?

समाधान— यह 'नारकी जीव नियमसे हैं' इस सूत्रके निर्देशसे जाना जाता है।

इसका बन्धकाधिकारमें अन्तर्भाव नहीं हो सकता, क्योंकि, यहां जो सर्व काल नियमसे व अनियमसे मार्गणा एवं मार्गणाविशेषोंकी अस्तित्वप्ररूपणा है उसका सामान्य अस्तित्वप्ररूपणामें अन्तर्भाव होनेका विरोध है।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव नियमसे हैं ॥ २ ॥

क्योंकि, सातों पृथिवियोंमें नारकियोंके नियमित अस्तित्व की अपेक्षा सामान्य प्ररूपणा से कोई भेद नहीं है।

शंका— सामान्यप्ररूपणासे ही विशेषप्ररूपणाके सिद्ध होनेपर पुनः प्ररूपणा किसलिये की जाती है।

समाधान— नहीं, क्योंकि सात पृथिवियोंके नियमसे अस्तित्वके अभावमें भी सामान्यरूपसे नियमतः अस्तित्वके होनेमें कोई विरोध नहीं है। अर्थात् यदि कदाचित् किसी पृथिवीविशेषमें नियमसे नारकी जीवोंका अस्तित्व न भी हो वे तो भी सामान्यसे अन्य पृथिवियोंकी अपेक्षा अस्तित्वका विधान हो सकता था।

**तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीओ णियमा अत्थि ॥ ३ ॥**

कुदो ? तीदाणागद-वट्टमाणकालेसु एदासिं मग्गणाणं मग्गणविसेसाणं च गंगापवाहस्सेव वोच्छेदाभावादो ।

**मणुसअपज्जत्ता सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ ४ ॥**

मणुसअपज्जत्ताणं कयावि अत्थित्तं होदि कयावि[1] ण होदि । कुदो ? सहावदो। को सहावो णाम ? अब्भंतरभावो[2] ।

**देवगदीए देवा णियमा अत्थि ॥ ५ ॥**

कुदो ? तिसु वि कालेसु देवाणं विरहाभावादो ।

**एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु ॥ ६ ॥**

---

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त, तथा मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनी नियमसे हैं ॥ ३ ॥

क्योंकि, अतीत, अनागत व वर्तमान कालोंमें इन मार्गणाओं व मार्गणाविशेषोंका गंगाप्रवाहके समान व्युच्छेद नहीं होता ।

मनुष्य अपर्याप्त कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं ॥ ४ ॥

क्योंकि, मनुष्य अपर्याप्तोंका कदाचित् अस्तित्व होता है और कदाचित् नहीं होता, क्योंकि ऐसा स्वभाव है ।

शंका— स्वभाव किसे कहते है ?

समाधान— आभ्यन्तरभावको स्वभाव कहते हैं । अर्थात् वस्तु या वस्तुस्थितिकी उस व्यवस्थाको उसका स्वभाव कहते हैं जो उसका भीतरी गुण है और बाह्य परिस्थितिपर अवलम्बित नहीं है ।

देवगतिमें देव नियमसे हैं ॥ ५ ॥

क्योंकि, तीनों ही कालोंमें देवोंके विरहका अभाव है ।

इस प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासियों तक देव नियमसे हैं ॥ ६ ॥

---

१ अ. क. प्रत्योः कयावि-कयावि इति पाठः । २ अ. आ. क. प्रतिषु अब्भंतराभावो इति पाठः ।

कुदो ? सव्वकालेसु अत्थित्तणेण तेहिमेदेसिं भेदाभावादो ।

**इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा अत्थि ॥ ७ ॥**

कुदो ? एदेसिं पवाहस्स तिसु वि कालेसु वोच्छेदाभावादो ।

**बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिय पज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा अत्थि ॥ ८ ॥**

सुगमं ।

**कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा अत्थि ॥ ९ ॥**

एदेसिं मग्गणाणं मग्गणविसेसाणं च पवाहस्स वोच्छेदाभावादो ।

---

क्योंकि, सर्व कालोंमें अस्तित्वकी अपेक्षा सामान्य देवोंसे इनका कोई भेद नहीं है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुसार एकेंद्रिय बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त जीव नियमसे हैं ॥ ७ ॥

क्योंकि, इनके प्रवाहका तीनों ही कालोंमें व्युच्छेद नहीं होता

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त नियमसे हैं ॥ ८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कायमार्गणानुसार पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक निगोदजीव बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त, तथा बादर वनस्पतिकायिक-प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त, एवं त्रसकायिक, त्रसकायिक पर्याप्त, अपर्याप्त जीव नियमसे हैं ॥ ९ ॥

क्योंकि, इन मार्गणाओं व मार्गणाविशेषोंके प्रवाहका व्युच्छेद नहीं होता ।

**जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी कायजोगी ओरालियकायजोगी ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी कम्मइयकायजोगी णियमा अत्थि ॥ १० ॥**

सुगमं ।

**वेउव्वियमिस्सकायजोगी आहारकायजोगी आहारमिस्सकायजोगी सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ ११ ॥**

कुदो ? सांतरसहावादो । ण च सहावो परपज्जणुजोगारुहो, अइप्पसंगादो ।

**वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदा णियमा अत्थि ॥ १२ ॥**

गंगापवाहस्सेव विच्छेदाभावादो ।

**कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाई णियमा अत्थि ॥ १३ ॥**

---

योगमार्गणानुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और कार्मणकाययोगी नियमसे है ॥ १० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी कदाचित् हैं कदाचित् नहीं हैं ॥ ११ ॥

क्योंकि, वे मार्गणाएं सान्तर स्वभाववाली है । और स्वभाव दूसरोंके प्रश्नके योग्य नहीं होता, क्योंकि, ऐसा होनेसे अतिप्रसंग दोष आता है ।

वेदमार्गणानुसार स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी, और अपगतवेदी जीव नियमसे हैं ॥ १२ ॥

क्योंकि, गंगाप्रवाहके समान इनका विच्छेद नहीं होता ।

कषायमार्गणानुसार क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी और अकषायी जीव नियमसे हैं ॥ १३ ॥

सुगमं ।

**णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभंगणाणी आभिणिबोहिय-सुद-ओहि-मणपज्जवणाणी केवलणाणी णियमा अत्थि ॥ १४ ॥**

णाणिणो इदि बहुवयणणिद्देसो किण्ण कओ ? ण, इकारांतपुरिस-णवुंसयलिंग सद्देहिंतो उप्पण्णपढमाबहुवयणस्स विहासाए लोवुवलंभादो[1] । जहा–पव्वए अग्गी जलंति, मत्ता हत्थी एंति त्ति । सेसं सुगमं ।

**संजमाणुवादेण सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धि-संजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा असंजदा णियमा अत्थि ॥ १५ ॥**

सुगमं ।

---

यह सूत्र सुगम है ।

ज्ञानमार्गणानुसार मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, विभंगज्ञानी आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी और केवलज्ञानी नियमसे हैं ॥ १४ ॥

शंका—सूत्रमें ' णाणिणो ' ऐसा बहुवचननिर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि इकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग शब्दोंसे उत्पन्न प्रथमाबहुवचनका विकल्पसे लोप पाया जाता है । जैसे—पव्वए अग्गी जलंति ( पर्वतपर अग्नि जलती हैं ), मत्ता हत्थी एंति ( मत्त हाथी आते हैं ) । यहां ' अग्गी ' और ' हत्थी ' पदोंमें प्रथमाबहुवचनविभक्तिका लोप होगया है । शेष सूत्र सुगम है ।

संयममार्गणानुसार सामायिक-छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत, परिहारशुद्धिसंयत, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत, संयतासंयत और असंयत जीव नियमसे हैं ॥ १५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१ अप्रतौ ' विहासालोगोवलंभादो '; आ-काप्रत्योः ' विहासालोभोवुवलंभादो '; मप्रतौ ' विहासाए लोवुवलंभादो ' इति पाठः ।

सुहुमसांपराइयसंजदा सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ १६ ॥

एदं पि सुगमं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी णियमा अत्थि ॥ १७ ॥

एदं पि सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया णीललेस्सिया काउलेस्सिया तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया णियमा अत्थि ॥ १८ ॥

सुगमं ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया णियमा अत्थि ॥१९॥

सिद्धिपुरक्कदा[1] भविया णाम, तव्विवरीया अभविया णाम । सिद्धा पुण ण भविया ण च अभविया, तव्विवरीयसरूवत्तादो । तहा[2] ते वि णियमा अत्थि त्ति किण्ण

सूक्ष्मसाम्परायिकसंयत कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं ॥ १६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

दर्शनमार्गणानुसार चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी नियमसे हैं ॥ १७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

लेश्यामार्गणानुसार कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, तेजोलेश्यावाले, पद्मलेश्यावले और शुक्ललेश्यावाले नियमसे हैं ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भव्यमार्गणानुसार भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक नियमसे हैं ॥ १९ ॥

सिद्धिपुरस्कृत अर्थात् मुक्तिगामी जीवोंको भव्य और इनसे विपरीत जीवोंको अभव्य कहते हैं । सिद्ध जीव न तो भव्य हैं और न अभव्य हैं, क्योंकि, उनका स्वरूप भव्य और अभव्य दोनोंसे विपरित है ।

शंका— भव्य, व अभव्योंके समान ' सिद्ध भी नियमसे हैं ' इस प्रकार क्यों

1 अ प्रती सिद्धिपुरक्कंदा इति पाठः २ अ. प्रती तम्हा इति पाठः ।

वुत्तं ? ण, बंधयाहियारे सिद्धाणमबंधयाणं संभवाभावादो । सेसं सुगमं ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी खइयसम्माइट्ठी[1] वेदगसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी णियमा अत्थि ॥ २० ॥

सुगमं ।

उवसमसम्माइट्ठी सासण-सम्माइट्ठी[2] सम्मामिच्छाइट्ठी सिया अत्थि, सिया णत्थि ॥ २१ ॥

कुदो ? एदेसिं तिण्हं मग्गणावयवाणं सांतरसरूवत्तदंसणादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी णियमा अत्थि ॥ २२ ॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारा अणाहारा णियमा अत्थि ॥ २३ ॥

एवं पि सुगमं ।

एवं णाणाजीवेहि भंगविचयाणुगमो समत्तो ।

---

नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि बंधकाधिकारमें अबंधक सिद्धोंकी संभावनाका अभाव है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

सम्यक्त्वमार्गणानुसार सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि नियमसे हैं ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं ॥ २१ ॥

क्योंकि, इन तीन मार्गणाप्रभेदोंका सान्तर स्वरूप देखा जाता है ।

संज्ञिमार्गणानुसार संज्ञी और असंज्ञी जीव नियमसे हैं ॥ २२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमार्गणानुसार आहारक और अनाहारक जीव नियमसे हैं ॥ २३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगम समाप्त हुआ ।

---

१ मु. प्रतौ ( खइयसम्माइट्ठी ) इति पाठः । २ मु. प्रतौ ( सासण )सम्माइट्ठी इति पाठः ।